डायमण्ड कॉमिक्स प्रस्तुति

गुरु गोविंदसिंह

DA-32-Rs. 10.00

गुरु गोबिन्दसिंह
सन् १६७५ की बात है। हिमालय की तराई में बसे हुए छोटे-से नगर, आनन्द पुर, में नौ वर्ष का लड़का गोबिन्द राय अपने मित्रों के साथ खेल रहा था–

...कि उसका बूढ़ा चाचा भागता हुआ आया।

यहाँ आ, बेटा गोबिन्द। तेरी माँ बुला रही है। बड़ा अशुभ समाचार है।
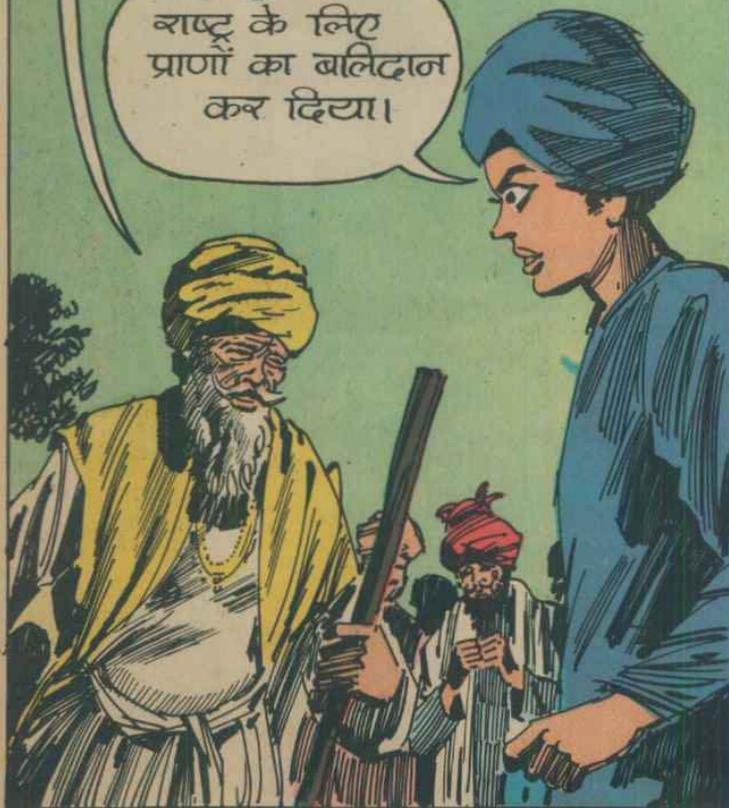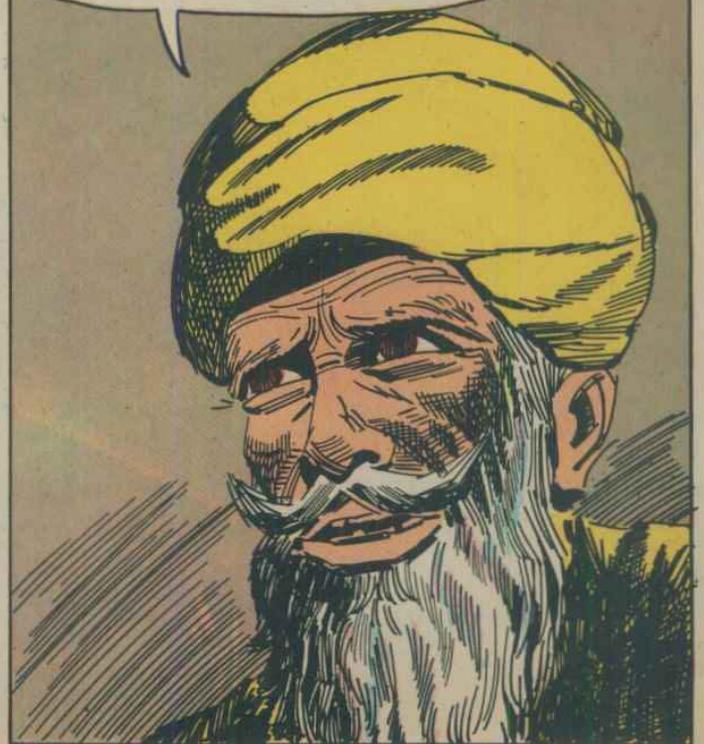
तेग बहादुर, अब तुम मेरे रहम के मोहताज हो। लोग तुम्हें संत कहते हैं। अगर सचमुच हो, तो कोई चमत्कार दिखाओ, वर्ना अपना ईमान छोड़ो।

मेरी गर्दन पर एक तावीज़ बँधा हुआ है जिसके कारण तुम्हारी तलवार मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी!

सूबेदार ने तेग़ बहादुर का सर काट देने की आज्ञा दी।

तेग़ बहादुर मारे गये। जब तावीज़ खोल कर देखा गया–
मैंने अपना सर दे दिया, अपना धर्म नहीं गंवाया!

अब तुम सिखों के नेता हो–
उनके दसवें गुरु हो।
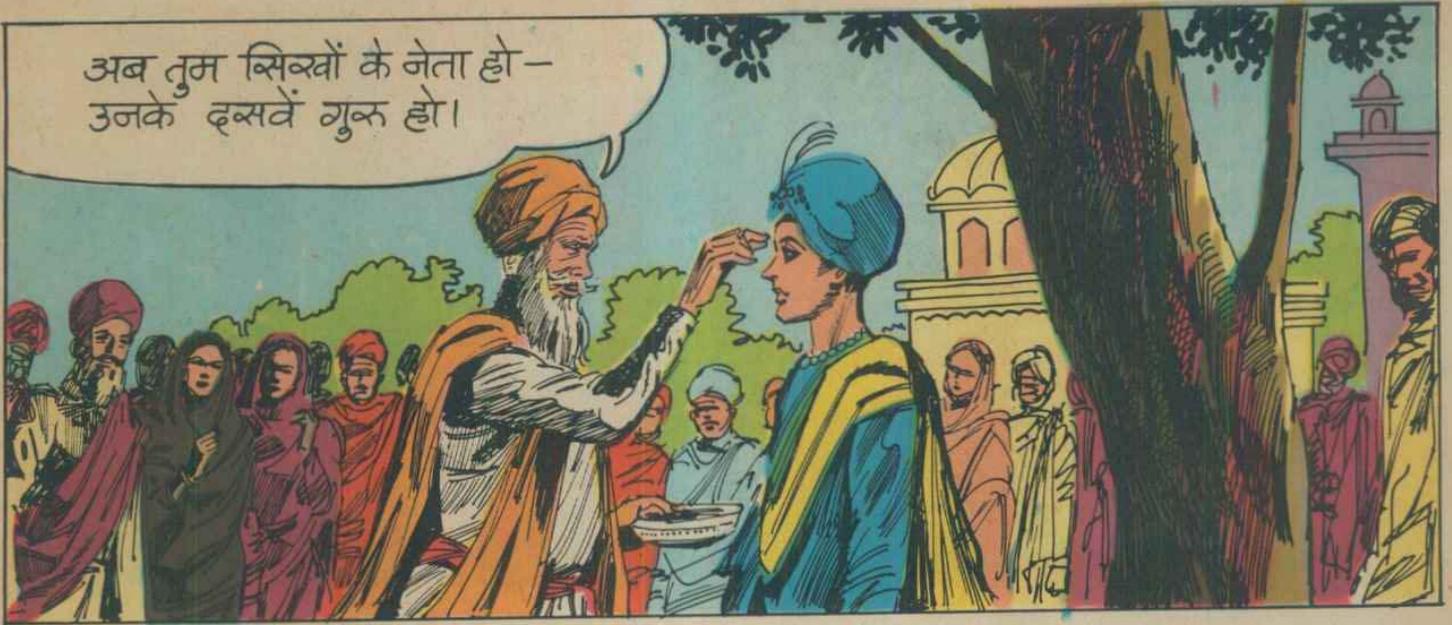
समय बीतने लगा। गुरु गोबिन्द ने संस्कृत, फ़ारसी, ब्रज तथा पंजाबी भाषाएँ सीखीं।

चलो, शिकार पर जाने का समय हो गया!

१६७७ में जित्तो के साथ गुरु गोबिन्द का विवाह हुआ।

गुरु गोबिन्द की ख्याति फैली और सिख उनके लिए भेंट ले-लेकर आने लगे।

मुझे भेंट देना हो तो केवल शस्त्रास्त्र तथा घोड़े दें।
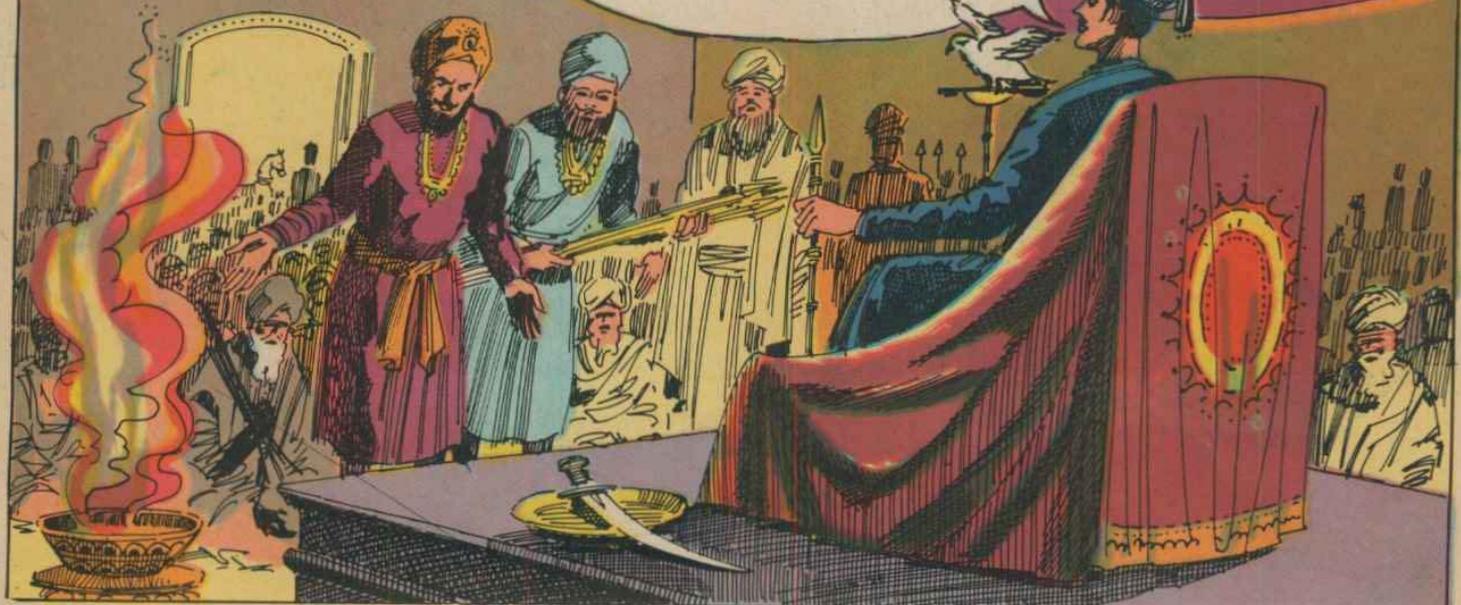
सत् श्री अकाल!
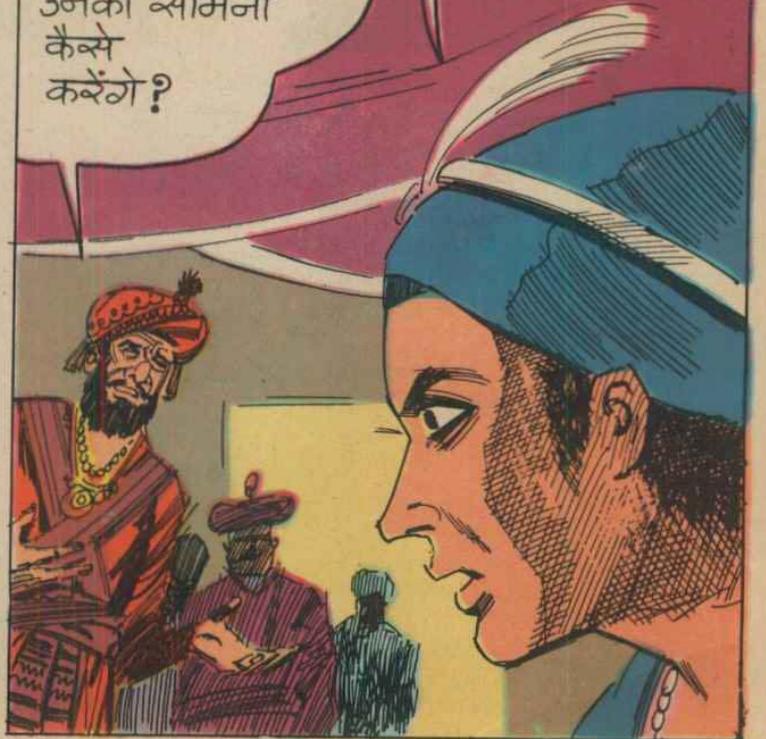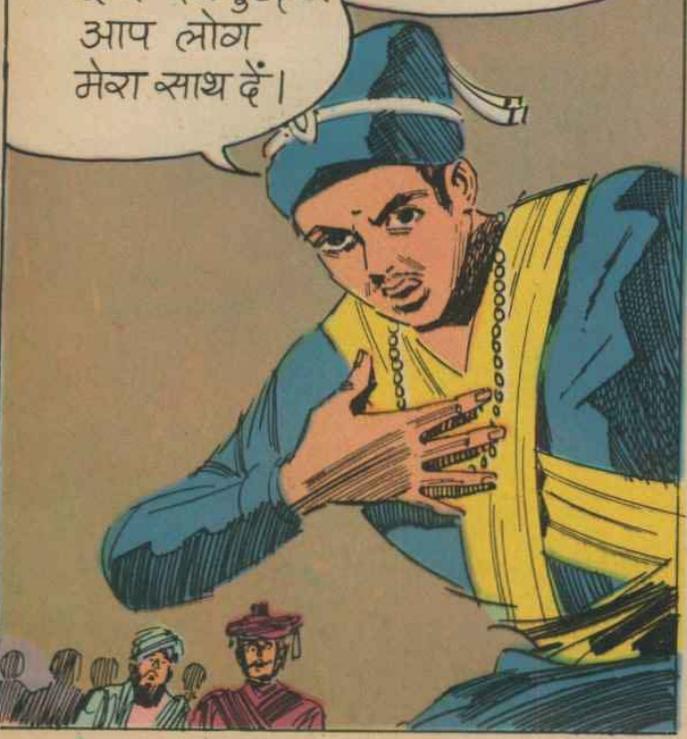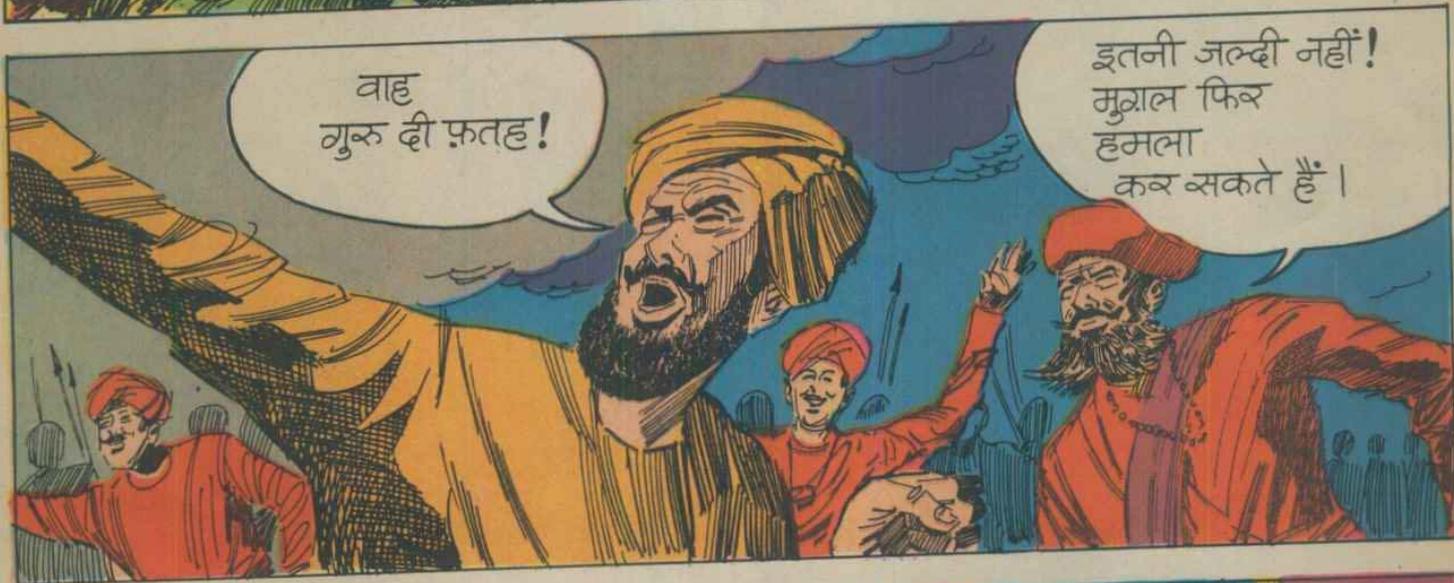
वाह
गुरु दी फ़तह!
इतनी जल्दी नहीं! मुग़ल फिर हमला कर सकते हैं।

हमने तलवार का पानी पी लिया है। हमें हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहना होगा। मैं सन्त-सैनिकों की सेना संगठित करूँगा।

१६९९ में गुरु गोबिन्द ने वैशाखी की प्रथमा को सिखों की सभा बुलायी।
सिख लम्बे-लम्बे केश बढ़ा कर आयें। वे तम्बाकू का त्याग करें तथा कृपाण से संस्कार करायें।
गुरु गोबिन्द

सिख बड़ी संख्या में एकत्रित हुए।
मुझे एक व्यक्ति का शीश चाहिए।

सभा में सन्नाटा छा गया। फिर एक युवक आगे आया।
मेरा शीश प्रस्तुत है, गुरुदेव!
तो मेरे साथ आओ!

गुरू गोबिन्द लौटकर आये तो उनकी कृपाण ताज़े लहू से लाल हो रही थी।
मुझे एक शीश और चाहिए।

मेरा शीश प्रस्तुत है, गुरूदेव!

गुरू गोबिन्द उसे भी तम्बू में ले गये।

इस बार भी वे तम्बू से अकेले बाहर आये और उनकी तलवार फिर ताज़े रक्त से सनी हुई थी।

इसी तरह तीन और व्यक्तियों को ले कर गुरू गोबिंद तम्बू में गये और अकेले बाहर आये।

पाँचवें व्यक्ति को तम्बू में ले जाने के बाद गुरु गोबिन्द फिर रक्त से सनी तलवार ले कर बाहर आये। फिर वे अकेले तम्बू में गये और फिर वापस बाहर आये।

केश और दाढ़ी बढ़ाने की क्या ज़रूरत है ?
केश भारतीय सन्त का चिन्ह है। तुम सन्त-सैनिक हो। केशों को सँवारने के लिए तुम्हें कंघा रखना होगा। यह तुम्हारा दूसरा चिन्ह होगा।
कृपाण केवल आत्मरक्षा के लिए उपयोग में लेनी होगी। तुम सैनिक हो-सैनिकों की तरह कच्छा धारण करोगे।
तुम लोग कड़ा भी धारण करोगे।
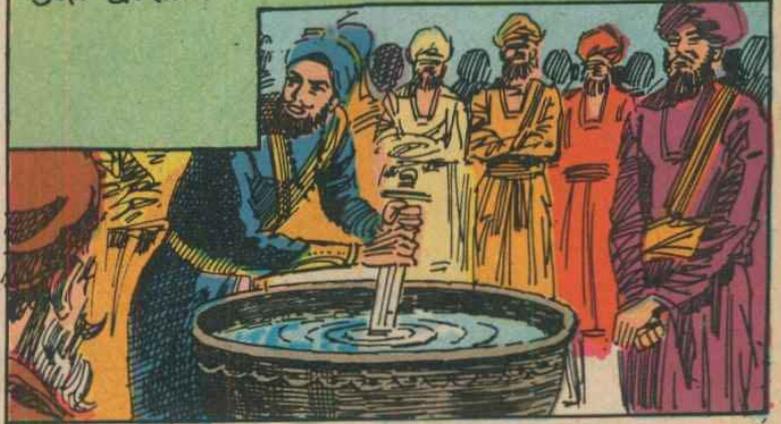
आपने हमारा नामकरण किया, हम आपका नामकरण करते हैं । आज से आप गोबिन्द राय नहीं, गोबिन्द सिंह हैं । जो नियम हम पर लागू हैं वे ही आप पर लागू होंगे ।

जैसी सबकी इच्छा । गुरु ख़ालसा का है और ख़ालसा गुरु का ।

कुछ समय के बाद शहंशाह औरंगज़ेब ने अपने पंजाब के सूबेदार, वज़ीर ख़ाँ को हुक्म दिया कि सिखों को नष्ट कर के गोबिन्द को कैद किया जाये।

मुग़ल आनन्दपुर पर घेरा डाल रहे हैं।

क़िले के फाटक बन्द कर दो। शत्रु को पास मत फटकने दो।
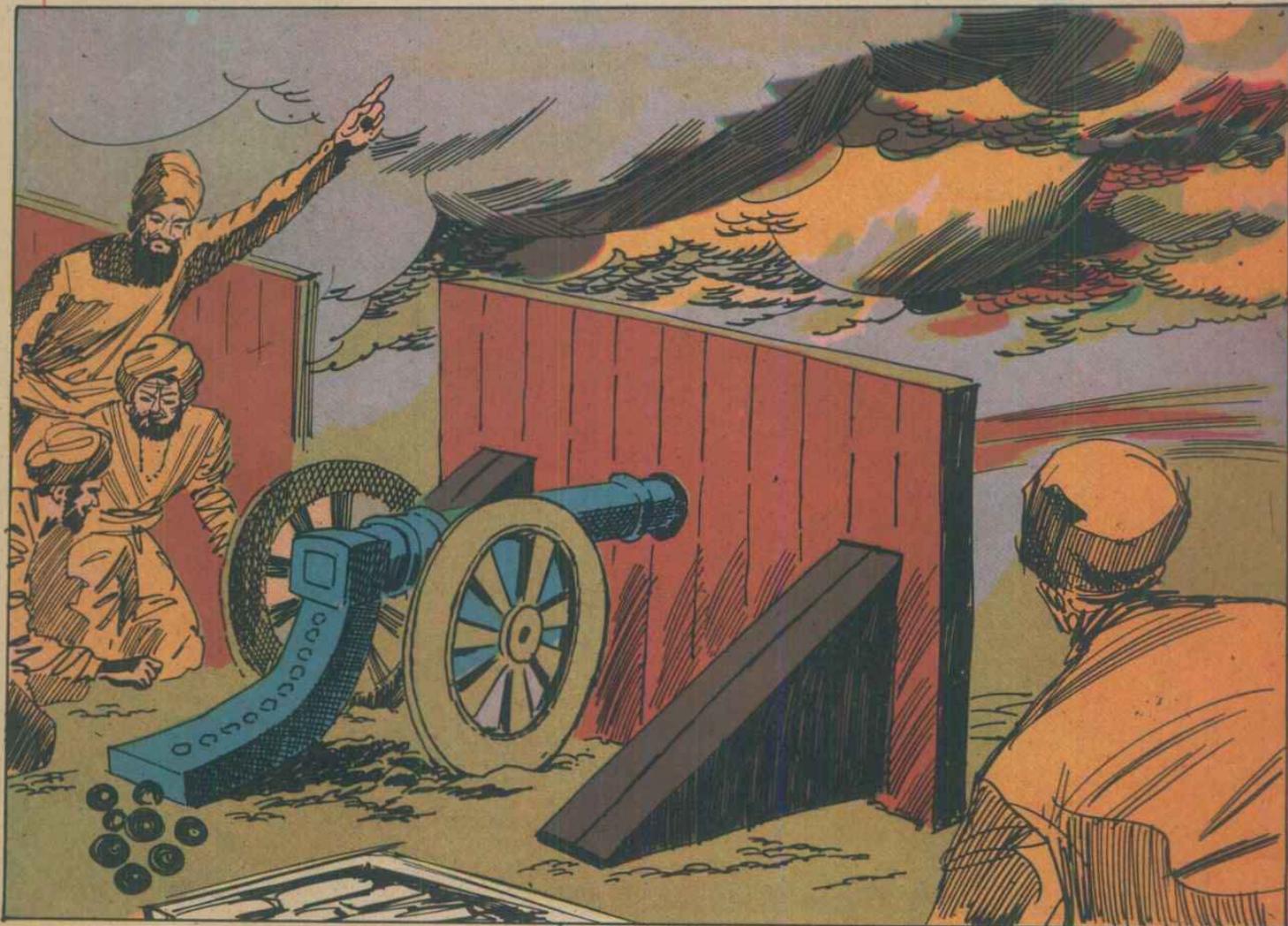
सिख हमें शहर के परकोटे
के पास तक
नहीं आने देते।
हम क्या करें?

हम आनन्दपुर पर पिछवाड़े से
हमला करने का ढोंग करेंगे।
इधर लड़ाकू हाथियों से बड़े फाटक पर
धावा करना होगा।

वे दूसरी ओर से
आगे बढ़ रहे हैं।
हमें क्या
करना चाहिए?

आने दो।
हम उनसे निबट लेंगे!
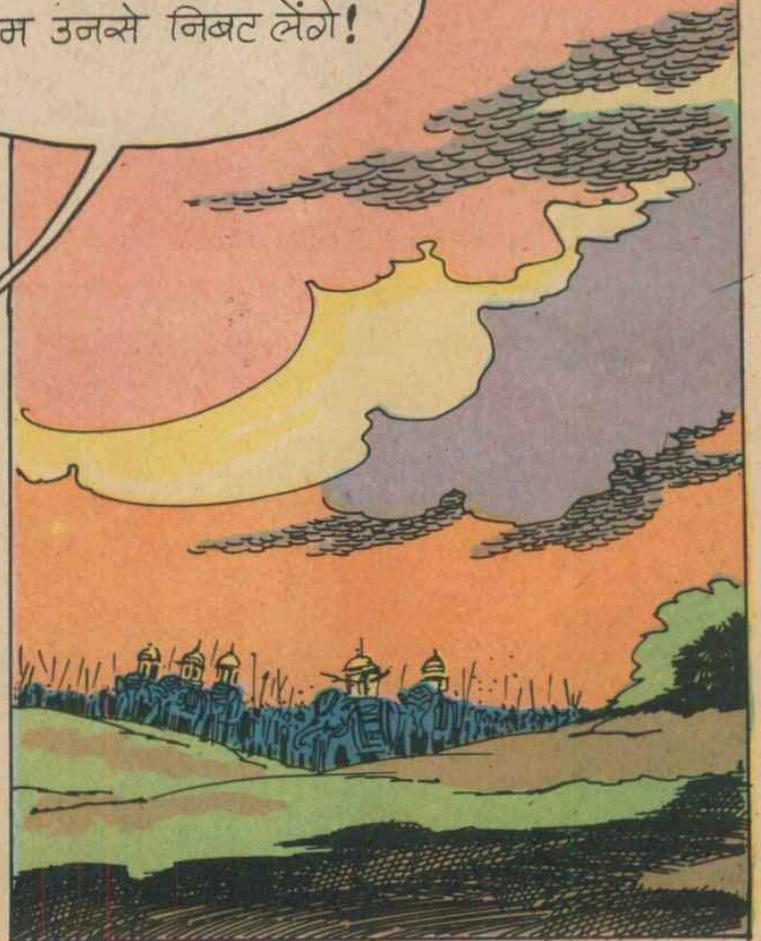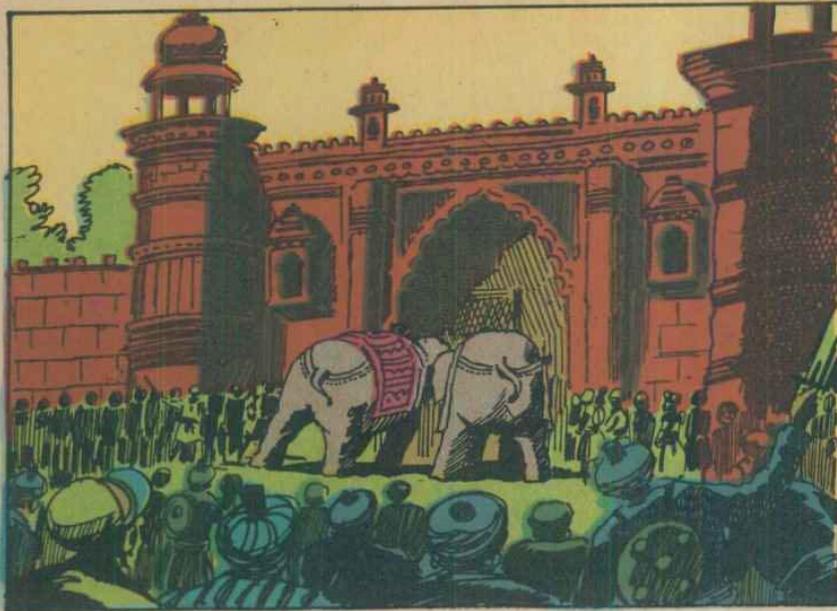
फाटक टूट जायेगा– मुग़ल हमारे किले में घुस आयेंगे।
फिर तुम इंतजार किस बात का कर रहे हो!

वाह गुरु की और ख़ालसा की!

ऐसे बहादुरों से हम कैसे लड़ सकेंगे?
हम लोग पीछे हट जायें जहाँ कोई ख़तरा न हो–

गुरु जी, मुग़ल तो हमसे नहीं लड़ रहे परन्तु हमारी रसद चुक गयी है – हम भूखों मर जायेंगे।

भरोसा रखो। रात को जब मुग़ल सो जायें, आदमियों को रसद लाने भेजना। यदि मुग़ल आक्रमण करें तो वीरता से उनका मुक़ाबला करना।
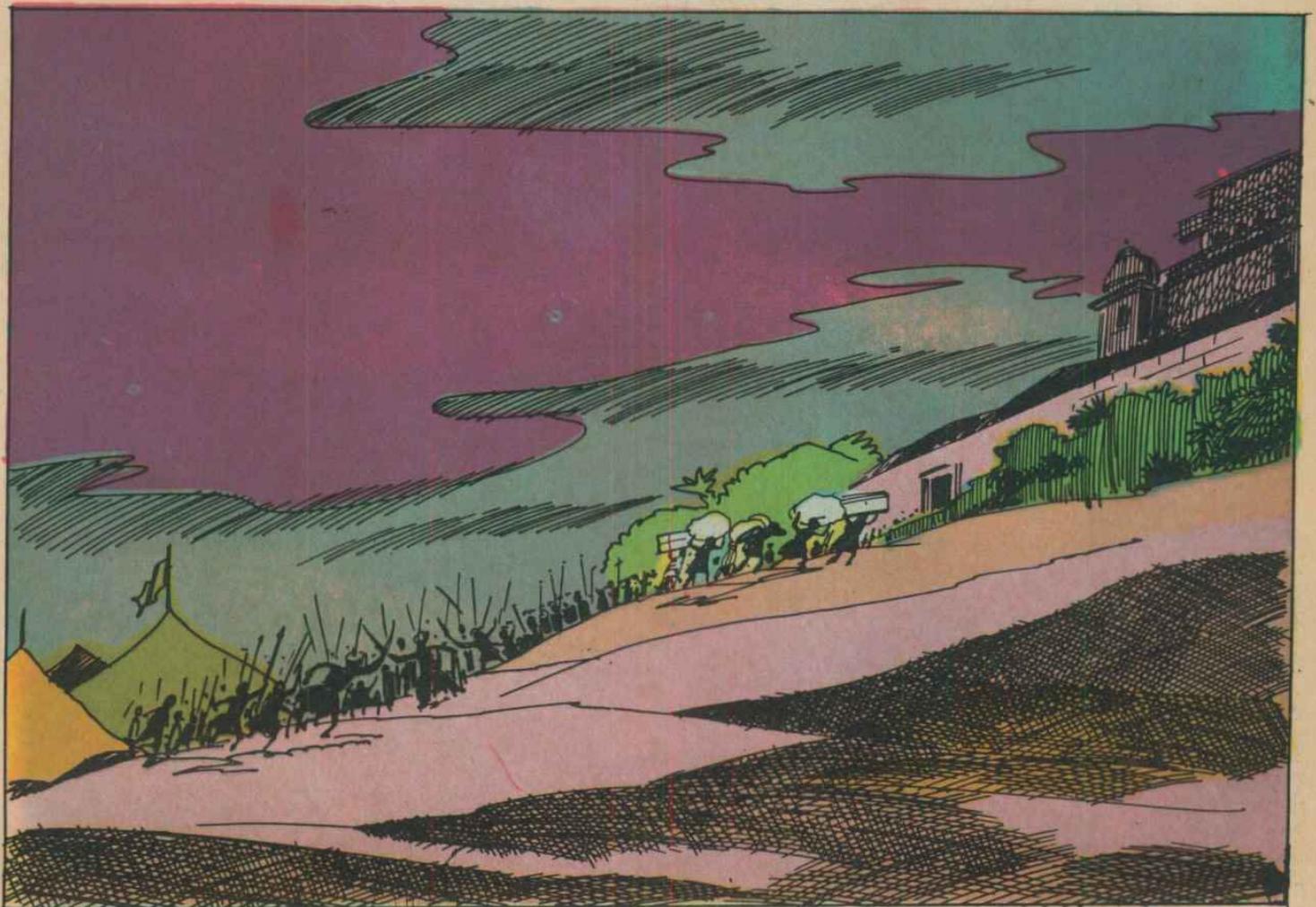
मुग़लों ने छः महीने घेरा डाले रखा। औरंगज़ेब आगबबूला हो रहा था। आख़िर उसके सेनापति, पाइन्दा ख़ाँ ने फ़ैसला किया –

मैं गोबिन्द को अकेले मुझसे लड़ने के लिए ललकारूंगा और फ़ैसला हमारी हार-जीत से होगा। उसके पास दूत भेजो!

मुग़लों का दूत आया –

पाइन्दा ख़ाँ से कहना कल सुबह फाटक के बाहर मैं उसकी प्रतीक्षा करूँगा।

मुग़ल सेना में पाइन्दा ख़ाँ सबसे सच्चा निशानेबाज़ है। उसकी चुनौती मत स्वीकार कीजिये।

फिर से वार करो–
यह
ठीक नहीं रहा।

अब मेरी बारी है–
सावधान!

तुम्हारे सरकण्डे
के तीरों से
मेरे फ़ौलादी
कवच पर
खरौंच भी
नहीं आयेगी!

सत् श्री अकाल!
गुरु गोबिन्द सिंह दी
फ़तह!

थोड़े समय तक शान्ति रही। फिर औरंगज़ेब ने सिखों पर दुबारा हमला करने का हुक्म दिया।

मुट्ठी भर गँवार देहाती भला सधे हुए पेशेवर सिपाहियों की इतनी बड़ी फ़ौज का मुकाबला कैसे करेंगे?

जहाँपनाह! हम सिखों को बरबाद कर देंगे,

हम उन्हें भूखों मार डालेंगे!

अन्त में मुग़ल सूबेदार ने ऐलान किया कि यदि कुछ समय के लिए गुरु गोबिन्द सिंह आनन्दपुर छोड़ दें तो मैं फिर कभी उन्हें नहीं छेड़ूँगा और क़िला भी लौटा दूँगा। गुरु गोबिन्द सिंह ने यह प्रस्ताव मान लिया।

हमारे साथ कपट किया गया- मुग़लों ने धावा कर दिया है।
स्त्रियों और बालकों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाओ। बाक़ी लोग मुक़ाबला करें।
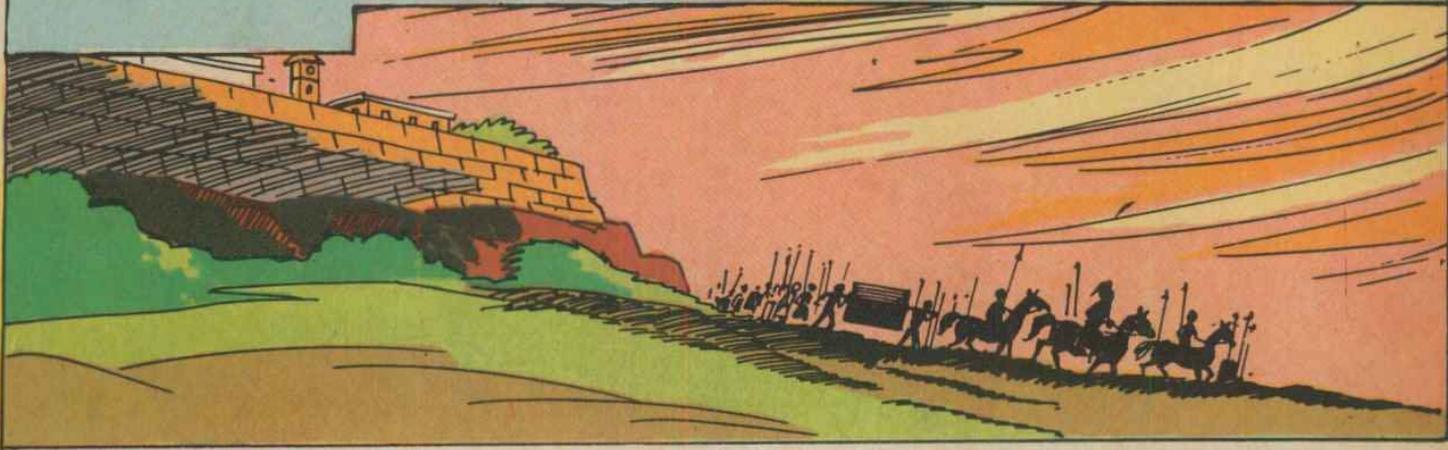
माता गुजरी तथा गुरु के दो छोटे पुत्रों ने एक सेवक के साथ सरहिन्द में शरण ली।

परन्तु किसी ने विश्वासघात कर के उन्हें पकड़वा दिया
वे सूबेदार वज़ीर ख़ाँ के सामने पेश किये गये।

तुम अगर मुसलमान हो जाओ तो तुम्हारी जान बख़्श दी जायेगी।

कभी नहीं! हमें इस्लाम से बैर नहीं। तथापि हम सिख हैं और सिख ही रहेंगे।

लड़कों को मौत की सज़ा सुनायी गयी और उन्हें
जीवित ही दीवार में चुनवा दिया गया।

उधर सिखों का जो जत्था पीछा करने वाले मुग़ल सैनिकों को रोक रहा था उसके सब आदमी वीरगति को प्राप्त हो गये।
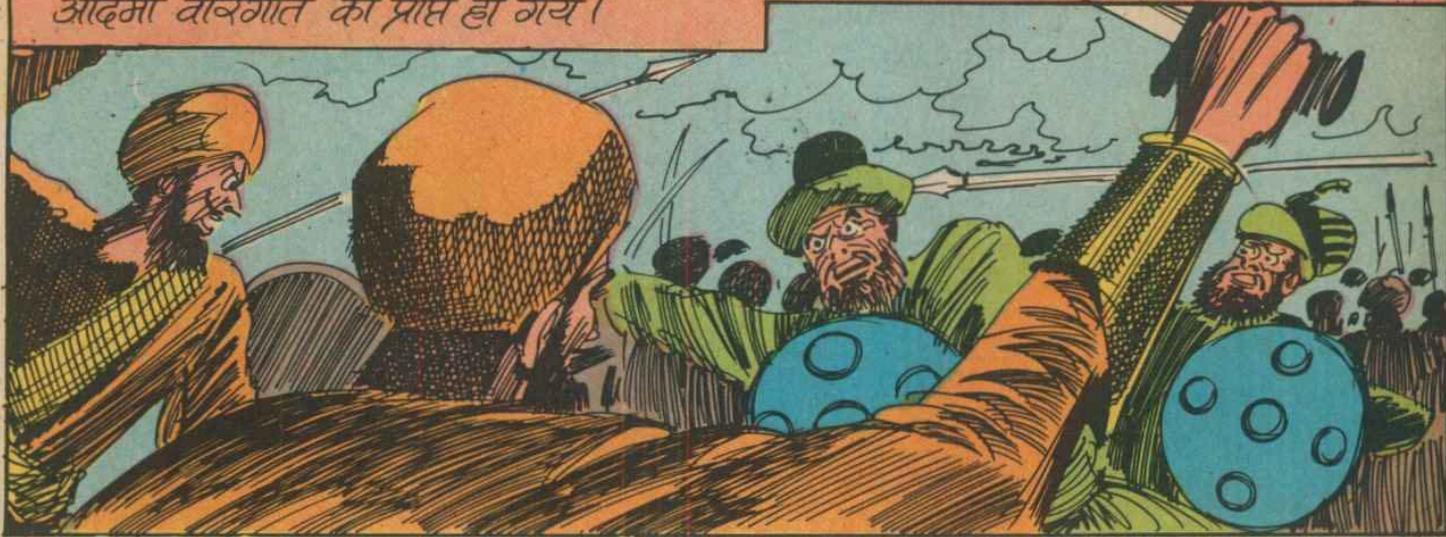
उनकी इस वीरता से गुरु गोबिन्द सिंह और थोड़े-से चुने हुए सिखों को समय मिल गया और वे चमकौर पहुँच गये।

गुरु गोबिन्द सिंह और उनके साथ के चालीस वीरों ने अन्तिम साँस तक लड़ने का निर्णय करके चमकौर में मोर्चा बाँधा।

हमारी सेना तो लगभग पूरी की पूरी नष्ट हो गयी– मुट्ठी भर सैनिक बचे हैं।
मेरे पुत्र, अजीत सिंह, को बुलाओ।

बेटा, अब तुम्हारी जाने की बारी है। शूरवीरों की तरह लड़ते-लड़ते प्राण देना।
आपका कथन मेरे लिए आज्ञा के समान है। सत्य के लिए मरने वाला मर कर भी अमर हो जाता है।

अब मेरी बारी है। जाने से पहले थोड़ा-सा पानी पी लूँ? मुझे प्यास लगी है।
नहीं। जब कर्त्तव्य पुकार रहा हो तो एक क्षण भी गँवाना उचित नहीं।

हमारी सेना
नष्ट हो गयी।
आपके पुत्र मृत्यु को
प्राप्त हो गये।
हम सुलह की याचना
करें क्या?

हर्गिज़ नहीं!
मेरे पुत्र मर गये
तो क्या– हज़ारों
अभी जीवित हैं।
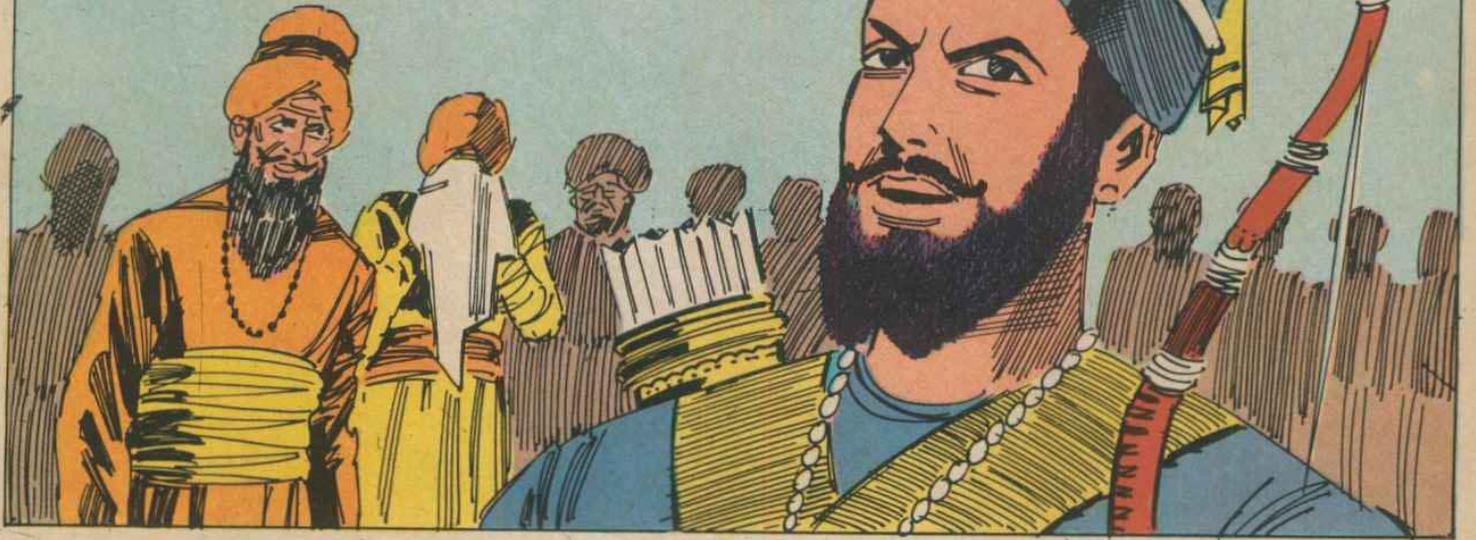
मेरे पुत्र की शक्ल गुरु से मिलती-जुलती है।
उसे गुरु के वस्त्र पहना कर शत्रु को
बहकावे में डाल देंगे! यह
बड़ा सौभाग्य है, बेटा!

गुरु गोबिन्द सिंह के भेष में उस नवयुवक ने...

... शत्रु का सामना किया।

मार डाला- सबको- सिखों के गुरु को भी हमने मार डाला!

शत्रु के सैनिक जब खुशियाँ मना रहे थे, गुरु गोबिन्द सिंह छिप कर निकल गये।
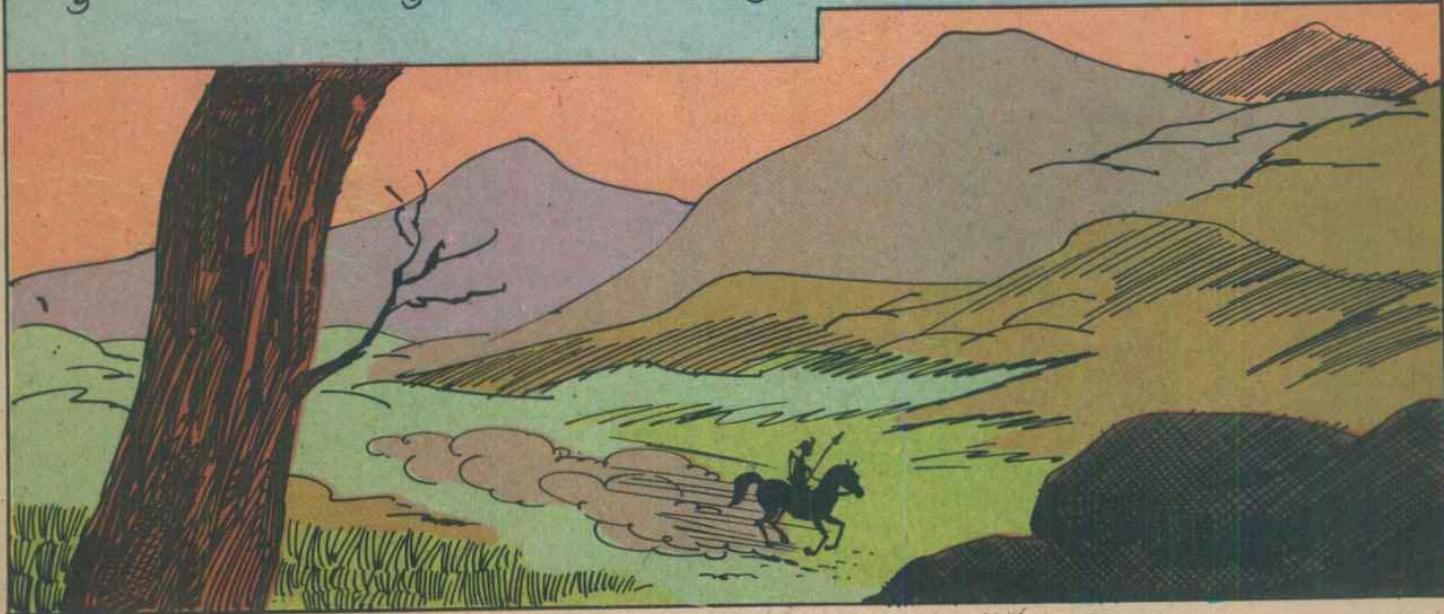
वे शत्रुओं से बचते हुए अकेले भटकते रहे।

उन्होंने माछीवारा के जंगल में विश्राम किया।

नगर में पहुँचने के बाद वे दो पठानों के सहयोग से भाग निकले।

गुरु गोबिन्द ने औरंगज़ेब को बड़ा लम्बा पत्र लिखा और उनके अफ़सरों की करतूतों के लिए शहंशाह को दोषी ठहराया
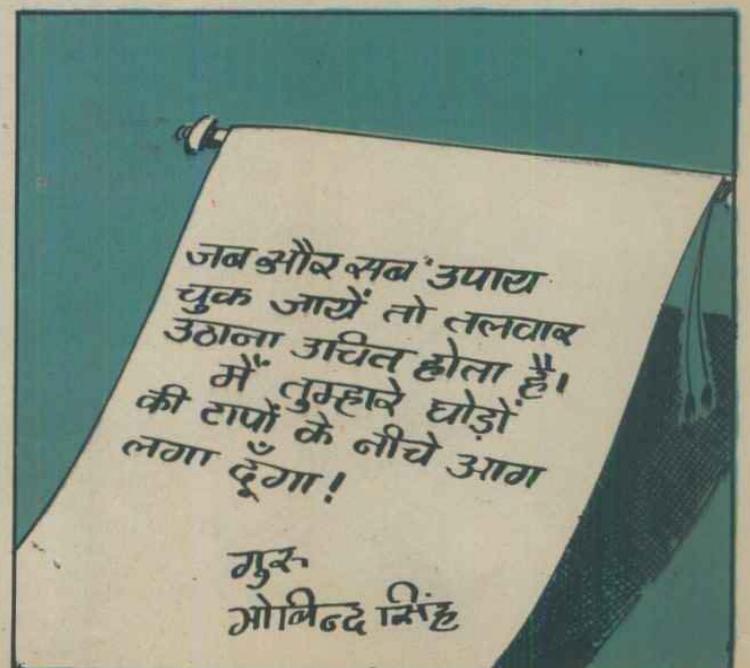
जब और सब उपाय चुक जायें तो तलवार उठाना उचित होता है। मैं तुम्हारे घोड़ों की टापों के नीचे आग लगा दूँगा!

गुरु
गोबिन्द सिंह

औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी, बहादुर शाह, ने गुरु गोबिन्द सिंह को मिलने के लिए बुलवाया।

आओ, मेरे दोस्त! यह छोटा-सा तोहफ़ा तुम्हारी नज़र है।

बड़ी मेहरबानी है आपकी! मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए— जो चाहिए केवल सिखों के लिए!

दिन शान्ति से बीतने लगे। गुरु गोबिन्द सिंह जगह-जगह की यात्रा पर बादशाह के साथ जाते थे। परन्तु पंजाब में वज़ीर ख़ाँ सिखों के पीछे पड़ा था।

एक दिन ~
आप गुरु गोविंद हैं! गोदावरी पर क्या करने आये हैं?
तुम्हें अपना शिष्य बनाने।

मैं आपका बन्दा हूँ।

आज से तुम्हारा नाम बन्दा सिंह बहादुर हुआ। तुम पंजाब जाओ और सिक्खों को फिर से जोश दिलाओ कि जो भी उनपर ज़ुल्म करे उसे वे उचित दण्ड दें!
आपकी आज्ञा का पालन होगा, गुरु जी!

कई महीने बीत गये। एक शाम, जब गुरु गोबिंदसिंह अपने तम्बू में अकेले थे, दो पठान छुरियाँ ले कर भीतर आ गये।
कौन हो तुम?

उन्होंने गुरु को छुरी भोंक दी, पर गुरु ने भी एक हत्यारे को मौत के घाट उतार दिया...
आ आ ह...
...उनके अनुयायियों ने दूसरे का पीछा कर उसे मार डाला।

घाव सी दिया गया, किन्तु एक दिन जब गुरु गोबिंदसिंह तीरन्दाजी का अभ्यास कर रहे थे...

...टाँके खुल गये।

गुरु गोबिंदसिंह जान गये कि उनका अन्त निकट है।
मैं सिखों का अन्तिम गुरु हूँ। अब भविष्य में शंका होने पर ग्रंथ साहब* तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा।
लेकिन गुरुदेव...

* सिखों का धर्म-ग्रंथ

मेरी मृत्यु का शोक मत करो! वर्षा जैसे बीज को पोषण देती है वैसे ही मेरे शब्द हमेशा ख़ालसा के साथ हैं और ख़ालसा को अनुप्राणित करते रहेंगे!
उनके अनुयायियों की यथाशक्ति कोशिश के बावजूद गुरु गोबिन्द सिंह की दशा बिगड़ती ही गयी और ७ अक्तूबर, १७०८ को उन्होंने प्राण त्याग दिये।
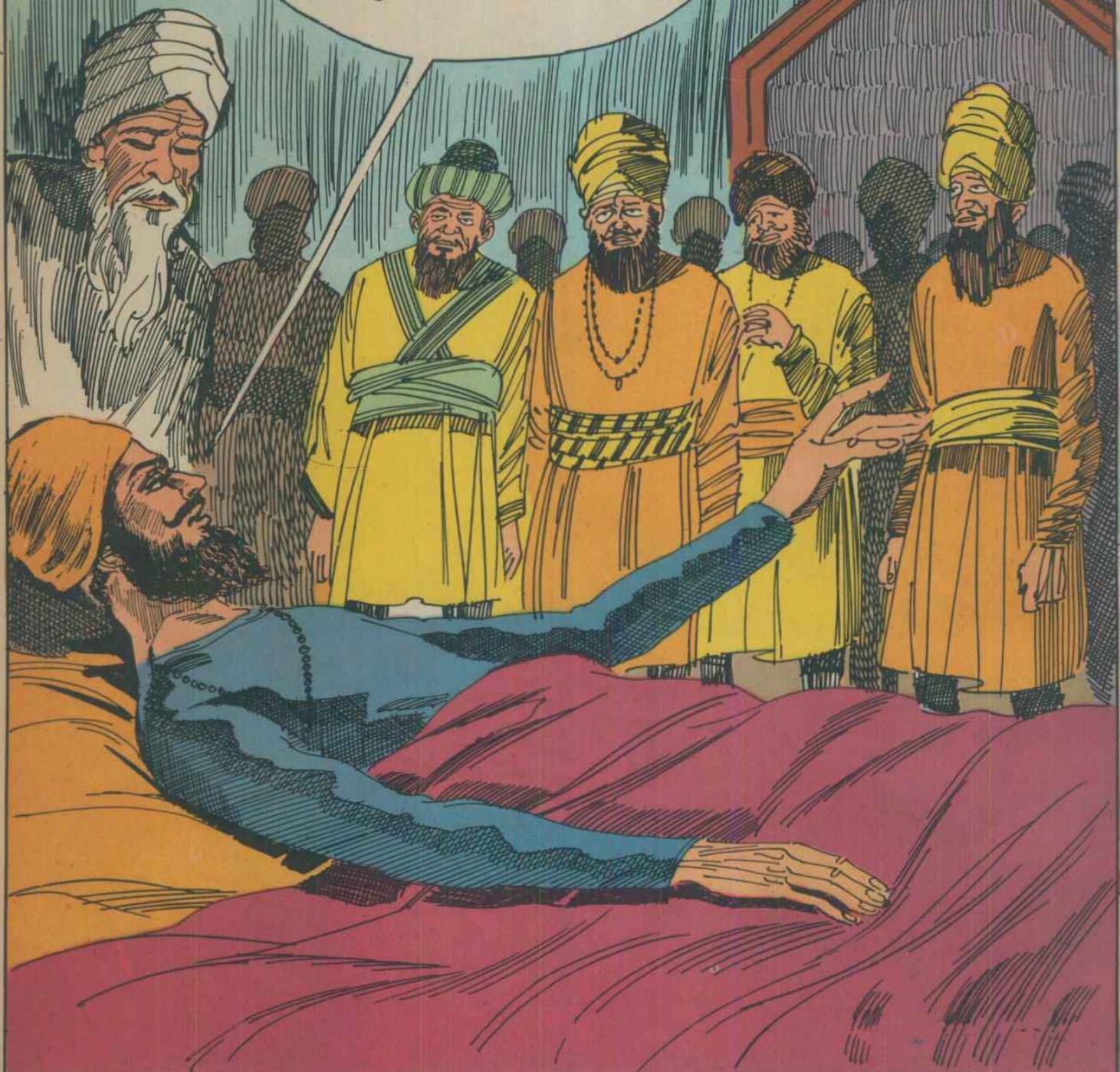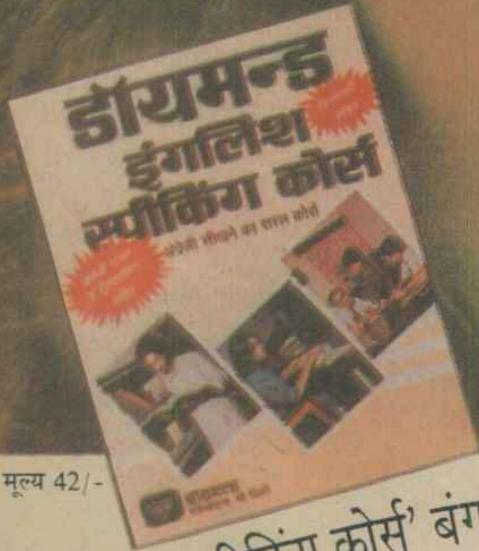
अंग्रेज़ी सिखाये
आत्मविश्वास जगाये
ज़िन्दगी की दौड़ में
आगे बढ़ाये
विशेषज्ञों द्वारा तैयार
डायमण्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स
एक ऐसा कोर्स जो आपको कुछ शब्द या वाक्य रटवाने की बजाय एक नवीन पद्धति द्वारा आधुनिक अंग्रेज़ी की गहराई तक पहुँचाता है। बेहद आसान निर्देशों व अनेक उदाहरणों के माध्यम से, यह कोर्स शब्द व वाक्य बनाने के नियमों, विभिन्न परिस्थितियों में बातचीत, महत्वपूर्ण विषयों के समानार्थक अंग्रेज़ी शब्दों व भाषा के अन्य पहलुओं से आपको अवगत कराता है।
देखते ही देखते अंग्रेज़ी पर आपका अपनी मातृभाषा की तरह अधिकार हो जाता है और आपके अंदर पैदा होता है ऐसा आत्मविश्वास कि आप हर जगह, हर व्यक्ति पर एक अमिट प्रभाव छोड़ पाते हैं।
देशभर में हर उम्र के लाखों व्यक्ति इस कोर्स का लाभ उठा चुके हैं।
आप क्यों पीछे रहते हैं?
डॉयमन्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स
मूल्य 42/-
'डायमण्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स' बंगाली, गुजराती, मराठी, नेपाली, उर्दू माध्यम में भी उपलब्ध है
मूल्य 36/-
मूल्य 42/-
मूल्य 36/-
मूल्य 36/-
मूल्य 32/-
आर्डर के साथ
आधा मूल्य
एडवांस भेजें।
डाक व्यय प्रत्येक 5/-
डायमण्ड पब्लिकेशन्स
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3273493, 3273495